भारत-यूरोपीय संघ साझेदारी का सुदृढ़ीकरण

यह एडिटोरियल 26/02/2025 को द इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित "In Trump's world, India and Europe need each other" पर आधारित है। लेख में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि अमेरिका की बदलती नीतियाँ अनिश्चितता उत्पन्न कर रही हैं, जिससे यूरोप भारत के लिये एक महत्त्वपूर्ण रणनीतिक और आर्थिक साझेदार बन गया है।

प्रिलिम्स के लिये:

भारत-यूरोपीय संघ संबंध, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI), टैरिफ कटौती, रक्षा प्रौद्योगिकी, संयुक्त सैन्य अभ्यास, हिंद महासागर, भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (TTC), अर्द्ध-चालक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियाँ, भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC), बहुपक्षीय संस्थान, G20, विश्व व्यापार संगठन, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, यूरोपीय संघ का कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (CBAM), स्वच्छता और फाइटोसैनिटरी (SPS) उपाय, BRICS+, बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR)

मेन्स के लिये:

बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत-यूरोपीय संघ संबंधों का महत्त्व।

यूरोपीयन कमीशन के अध्यक्ष की संपूर्ण आयुक्त मंडल के साथ हाल ही में भारत की अधिकारिक यात्रा, जिसमें आयुक्तों का उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी शामिल है, भारत-यूरोपीय संघ संबंधों के बढ़ते महत्त्व को उजागर करती है। जैसे-जैसे अमेरिकी विदेश नीति बदलती जा रही है, **ट्रान्स-अटलांटिक गठबंधनों, व्यापार नीतियों और सुरक्षा प्रतिबद्धताओं में व्यवधान आ रहे हैं, भारत और यूरोप** दोनों को ही अपनी **साझेदारी को मज़बूत करने की आवश्यकता** हुई है। भारत के लिये यूरोपीय संघ के साथ व्यापार, सुरक्षा और प्रौद्योगिकी संबंधों को गहरा करना **आर्थिक स्थिरता, रणनीतिक विविधीकरण** तथा चीन व अमेरिका के लिये एक भू-राजनीतिक प्रतिपक्ष प्रदान करता है। यह यात्रा सहयोग का विस्तार करने और लंबे समय से चली आ रही व्यापार एवं निवेश बाधाओं को दूर करने का अवसर प्रदान करती है।

भारत-यूरोपीय संघ संबंधों का क्या महत्त्व है?

- **आर्थिक और व्यापार संबंध:** यूरोपीय संघ **भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक** है (साथ ही, भारत **यूरोपीय संघ का 9वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** है), वर्ष 2023 में **भारत के कुल व्यापार** में इसका हिस्सा 12.2% होगा, जो **अमेरिका और चीन** दोनों से आगे होगा।
  - **पिछले दशक** में भारत और यूरोपीय संघ के बीच **वस्तुओं के व्यापार में 90% की वृद्धि** हुई, जबकि **वर्ष 2020 से वर्ष 2023 तक सेवाओं के व्यापार में 96% की वृद्धि** हुई।
- **यूरोपीय संघ से** पर्याप्त प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) होता है, जो भारत के औद्योगिक विकास, रोज़गार सृजन और प्रौद्योगिकी अंतरण में सहायक है।
- **मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर वार्ता लंबे गतिरोध के बाद वर्ष 2021 में फिर से शुरू हुई, जिसमें** टैरिफ कटौती**, निवेश संरक्षण और नियामक संरेखण पर ध्यान केंद्रित किया गया।**
  - यूरोपीय संघ भारत में अधिक बाज़ार अभिगम चाहता है, जबकि भारत निर्यात और निवेश को बढ़ावा देने के लिये व्यापार बाधाओं को कम करना चाहता है।
- **सुरक्षा और रक्षा सहयोग:** यूरोपीय संघ भारत के साथ समुद्री सहयोग का विस्तार कर रहा है, गुरुग्राम में **भारतीय नौसेना के सूचना संलयन केंद्र** में एक **संपर्क अधिकारी तैनात** कर रहा है।
  - **दोनों पक्ष** संयुक्त सैन्य अभ्यास और **आतंकवाद-रोधी रणनीतियों** पर चर्चा के साथ-साथ रक्षा प्रौद्योगिकी में **अधिक सहयोग की संभावनाएँ** तलाश रहे हैं।
  - यूरोपीय संघ की **एशिया के साथ सुरक्षा सहयोग बढ़ाने (ESIWA)** पहल, भारत सहित एशिया के साथ सुरक्षा संबंधों को बढ़ावा देती है, ताकि हिंद महासागर के प्रमुख समुद्री मार्गों की सुरक्षा की जा सके।
  - हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा संबंधों को मज़बूत करना **चीन की विस्तारवादी नीति** का मुकाबला करने में भारत के हितों के अनुरूप है तथा यूरोपीय भागीदारी के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ाव देता है।
- **प्रौद्योगिकी, डिजिटल और बुनियादी अवसंरचना सहयोग:** भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (TTC) अर्द्धचालक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित करती है।

- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) का उद्देश्य **वैश्विक व्यापार मार्गों और ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना** है।
- **डिजिटल भुगतान** और फिनटेक में यूरोपीय संघ-भारत **सहयोग बढ़ रहा है,** जिसमें **सीमा पार डिजिटल लेनदेन पर चर्चा** हो रही है।
- प्रौद्योगिकी संबंधों को मज़बूत करने से नवाचार में भारत का नेतृत्व सुनिश्चित होता है,**डिजिटल परिवर्तन को बढ़ावा** मिलता है और चीन के नेतृत्व वाली आपूर्ति शृंखलाओं **पर निर्भरता कम** होती है।

- **रणनीतिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण: रूस और चीन** के साथ अमेरिका के संभावित साझेदारी से वैश्विक संरेखण में बदलाव आ सकता है, जिससे **भारत के लिये साझेदारी को व्यापक बनाना अनिवार्य** हो जाएगा।
  - यूरोपीय संघ एक **स्थायी और पूर्वानुमानित साझेदार** है, जो सुरक्षा निर्भरता के बिना आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करता है।
  - **यूरोपीय संघ की रणनीतिक स्वायत्तता** का उद्देश्य अमेरिका पर निर्भरता को कम करना है तथा सुरक्षा उलझनों के बिना आर्थिक, तकनीकी और रणनीतिक सहयोग सुनिश्चित करके **भारत की बहु-संरेखण नीति के साथ तालमेल** स्थापित करना है।
- **वैश्विक शासन एवं भू-राजनीतिक पुनर्संरेखण:** यूरोपीय संघ भारत की व्यापार विविधीकरण की रणनीति के साथ तालमेल बिठाते हुए **चीन पर अपनी आर्थिक निर्भरता कम कर रहा है।**
  - जैसे-जैसे ट्रान्स-अटलांटिक तनाव बढ़ रहा है, यूरोपीय संघ स्वतंत्र विदेश नीति चाहता है, जिससे**भारत का कूटनीतिक प्रभाव बढ़ रहा है।**
  - दोनों साझेदार G20, विश्व व्यापार संगठन **और** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित **बहुपक्षीय संस्थाओं** में **नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थन** करते हैं।

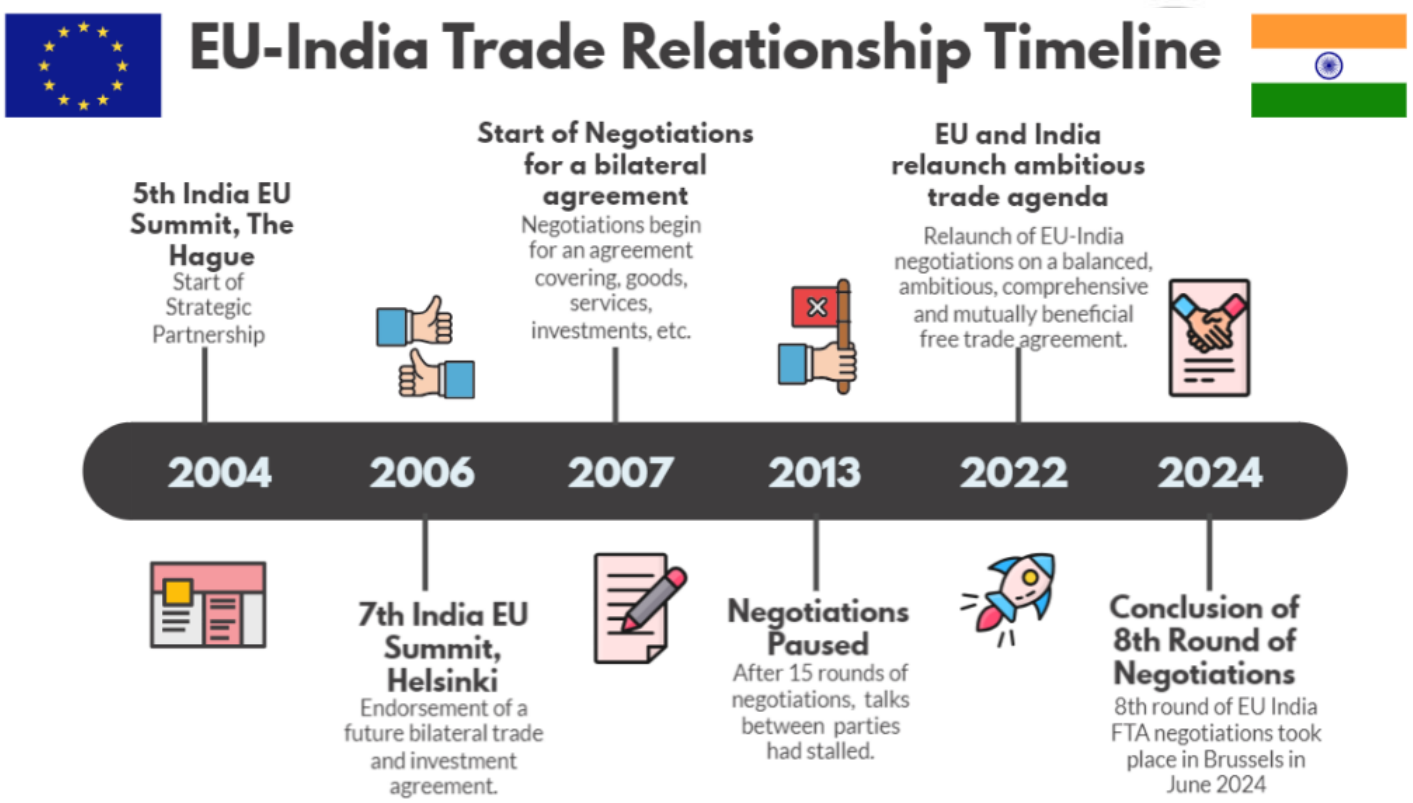

The various negotiating hurdles included: (i) the desire of India for better market access for services suppliers through Mode 4 liberalisation over market access for goods in trade negotiations; (ii) India's wish for the EU to cut tariff and subsidy support to its agricultural products for fear of EU exports displacing Indian agricultural products; (iii) the reluctance of the Indian government to negotiate government procurement issues; (iv) the desire of India to achieve 'data-secure' status for the country, to allow the flow of sensitive data, such as information about patents, under data protection laws in the EU.

Made with VISME

भारत-यूरोपीय संघ की प्रमुख पहल

- **रणनीतिक सहयोग एवं वैश्विक शासन:**
  - **यूरोपीय संघ-भारत रणनीतिक साझेदारी: वर्ष 2025 के लिये रोडमैप: व्यापार, निवेश, डिजिटलीकरण, जलवायु परिवर्तन, सुरक्षा, ग्लोबल गवर्नेंस** तथा **जलवायु अनुकूलन, सतत् विकास और तकनीकी उन्नति** सुनिश्चित करना।
    - **स्वच्छ ऊर्जा, कनेक्टिविटी और सुरक्षा** पर ध्यान केंद्रित करना, प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों में भारत-यूरोपीय संघ सहयोग को बढ़ाना।
- **ऊर्जा एवं जलवायु कार्रवाई:**
  - **यूरोपीय संघ-भारत स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु साझेदारी: अक्षय ऊर्जा, स्मार्ट ग्रिड** और **सतत् ऊर्जा के लिये स्वच्छ प्रौद्योगिकी वित्तपोषण में सहयोग** का विस्तार।
    - **जलवायु अनुकूलन** और **जलवायु परिवर्तन शमन का समर्थन** करता है, वैश्विक हरित परिवर्तन में भारत की भूमिका को बढ़ाता है।
  - **यूरोपीय संघ-भारत ग्रीन हाइड्रोजन साझेदारी:** ग्रीन हाइड्रोजन और **अपतटीय पवन ऊर्जा** को बढ़ावा देने के लिये **नीतिगत**

कार्यढाँचे एवं पायलट परियोजनाएँ विकसित करती है।
    - **1 बिलियन यूरो के यूरोपीय निवेश बैंक (EIB) कोष** के साथ **भारत के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन** करता है।
  - **सतत् उपभोग और उत्पादन (SWITCH-एशिया कार्यक्रम): पर्यावरण अनुकूल विनिर्माण, अपशिष्ट प्रबंधन और संधारणीय उपभोक्ता प्रथाओं** को प्रोत्साहित करता है।
    - **एनवायरमेंटल फुटप्रिंट** को कम करता है, चक्रीय अर्थव्यवस्था पहल को आगे बढ़ाता है।
- **व्यापार एवं आर्थिक सहयोग:**
  - **यूरोपीय संघ-भारत व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (TTC):** भविष्य के लिये तैयार अर्थव्यवस्थाओं के लिये **डिजिटल गवर्नेंस, व्यापार समुत्थानशीलन** और **हरित प्रौद्योगिकी साझेदारी** को बढ़ाता है।
    - **आपूर्ति शृंखला विविधीकरण** को मज़बूत करता है, **एकल बाज़ार स्रोतों पर आर्थिक निर्भरता को कम करता है।**
  - **ग्लोबल ग्रीन बॉण्ड पहल: संधारणीय बुनियादी अवसंरचना** और **जलवायु परियोजनाओं के वित्तपोषण** के लिये **ग्रीन बॉण्ड** जारी करने को बढ़ावा देती है।
    - **जलवायु वित्त कार्यढाँचे** को बढ़ाता है, स्वच्छ ऊर्जा में निजी निवेश को आकर्षित करता है।
- **संधारणीय शहरीकरण और कनेक्टिविटी:**
  - **यूरोपीय संघ-भारत कनेक्टिविटी साझेदारी: डिजिटल और भौतिक बुनियादी अवसंरचना** को बढ़ाती है, **आपूर्ति शृंखलाओं एवं रसद में सुधार** करती है।
    - **परिवहन नेटवर्क, शहरी गतिशीलता** और **अंतर-क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण** को मज़बूत करता है।
  - **भारत-यूरोपीय संघ शहरी मंच:** यह संधारणीय शहरी विकास के लिये सर्वोत्तम प्रथाओं, नीतियों और नवीन दृष्टिकोणों को साझा करने के लिये अधिकारियों, विशेषज्ञों एवं हितधारकों के बीच संवाद को सक्षम बनाता है।
- **सामाजिक विकास और लैंगिक समानता:**
  - **वी-इम्पॉवर इंडिया पहल: स्वच्छ ऊर्जा और संधारणीय उद्योगों में लैंगिक समानता** एवं **महिलाओं की भागीदारी को** मज़बूत करती है।
    - **महिला उद्यमिता और समावेशी व्यापार मॉडल का समर्थन** करती है, आर्थिक विविधता को बढ़ावा देती है।

भारत-यूरोपीय संघ संबंधों के लिये चुनौतियाँ क्या हैं?

- **अवरुद्ध मुक्त व्यापार समझौता (FTA) वार्ता:** यूरोपीय संघ ने ऑटोमोबाइल, स्पिरिट्स और डेयरी पर कम टैरिफ की मांग की, जो**भारत की घरेलू**

व्यापार नीतियों के साथ असंगतता है।
    - भारत को **फार्मास्यूटिकल्स, IT सेवाओं और कृषि उत्पादों** के लिये अधिक बाज़ार अभिगम की आवश्यकता है तथा उसे यूरोपीय संघ के सख्त नियमों का सामना करना पड़ रहा है।
    - यूरोपीय संघ का कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (CBAM) भारतीय निर्यातकों के लिये अतिरिक्त चुनौतियाँ पेश करती है।
- **निवेश बाधाएँ और विनियामक बाधाएँ:** भारत के व्यापार नियम प्रतिबंधात्मक बने हुए हैं, जिनमें **व्यापार में तकनीकी बाधाएँ (TBT)** और स्वच्छता और फाइटोसैनिटरी (Sp) उपाय यूरोपीय व्यवसायों को प्रभावित कर रहे हैं।
    - यूरोपीय निवेशक **अधिक पूर्वानुमानित नीतिगत परिवेश** चाहते हैं, विशेष रूप से निवेश संरक्षण समझौतों के मामले में।
- **डेटा गोपनीयता विनियम: यूरोपीय संघ के सख्त डेटा कानून** भारत से डिजिटल निर्यात को **महंगा और जटिल** बनाते हैं।
    - भारत के पास **यूरोपीय संघ की डेटा पर्याप्तता स्थिति का अभाव** है, जिससे निर्बाध डेटा ट्रांसफर में बाधा उत्पन्न होती है, जबकि लघु IT कंपनियाँ **उच्च अनुपालन लागत** से जूझती हैं, जिससे **प्रतिस्पर्द्धा सीमित** हो जाती है।
    - भारतीय कंपनियों को यूरोपीय संघ के बाज़ार तक पहुँचने के लिये महंगी अनुपालन प्रणाली की आवश्यकता है।
- **विदेश नीति में मतभेद:** यूरोपीय संघ को उम्मीद है कि रूस के विरुद्ध प्रतिबंधों पर भारत का रुख और मज़बूत होगा, जबकि **भारत तटस्थ रुख बनाए रखेगा** तथा **कूटनीति को प्राथमिकता** देगा।
    - रूस, अमेरिका और यूरोप के साथ **भारत के बहु-संरेखण दृष्टिकोण** के कारण ब्रुसेल्स के साथ **कभी-कभी नीतिगत विसंगतियाँ** उत्पन्न हो जाती हैं।
- **सीमित रक्षा सहयोग:** रूस के साथ भारत के गहरे रक्षा संबंधों और अमेरिका के साथ बढ़ते संबंध **यूरोपीय रक्षा सहयोग के लिये बहुत कम संभावनाएँ** छोड़ते हैं।
    - यूरोपीय संघ की खंडित **रक्षा रणनीति** दीर्घकालिक सुरक्षा प्रतिबद्धताओं में अनिश्चितताएँ उत्पन्न करती है।
- **आपूर्ति शृंखला जोखिम:** व्यापार में विविधता लाने के भारत के प्रयासों के बावजूद, चीन भारत और यूरोपीय संघ दोनों के लिये एक प्रमुख **आर्थिक अभिकर्त्ता** बना हुआ है।
    - वैकल्पिक आपूर्ति शृंखलाओं के निर्माण के लिये **निरंतर निवेश** और **नियामक समायोजन की आवश्यकता** होती है।

आगे की राह:

- **FTA को तीव्र गति देना और व्यापार बाधाओं को दूर करना: टैरिफ विवादों** को हल करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिये, विशेष रूप से **ऑटोमोटिव, फार्मास्यूटिकल्स और डिजिटल ट्रेड** में।
    - FTA वार्ता में तीव्रता लाने से **आपूर्ति शृंखला सुदृढ़ होगी, व्यापार बाधाएँ कम होंगी** और **वैकल्पिक आर्थिक संबंध बनेंगे।**
    - **उच्च-तकनीकी निर्यात को बढ़ावा** देने तथा भारत के **विनिर्माण क्षेत्र में अधिक यूरोपीय निवेश** को सुविधाजनक बनाने से **आर्थिक विकास को गति** मिलेगी।
- **डेटा-साझाकरण कार्यढाँचे पर वार्ता:** भारत को सीमा पार डेटा फ्लो को सुचारू बनाने के लिये यूरोपीयन यूनियन-अमेरिका स्टाइल प्राइवेसी शील्ड **पर वार्ता** करनी चाहिये।
    - **पारस्परिक मान्यता कार्यढाँचा** भारतीय फर्मों के लिये **अनुपालन लागत को कम कर सकता है,** जबकि घरेलू डेटा अनुपालन निकाय उन्हें यूरोपीय संघ के गोपनीयता मानदंडों को कुशलतापूर्वक पूरा करने में मदद करेंगे।
    - साइबर सुरक्षा कानूनों को दृढ़ करने से **वैश्विक डिजिटल व्यापार में भारत की विश्वसनीयता** बढ़ेगी।
- **रक्षा एवं सुरक्षा संबंधों को मज़बूत करना: संयुक्त नौसैनिक अभ्यास, साइबर रक्षा साझेदारी** और **खुफिया-साझाकरण तंत्र का विस्तार** किया जाना चाहिये।
    - **चीन की क्षेत्रीय आक्रामकता का मुकाबला करने के लिये** भारत की हिंद-प्रशांत रणनीति को **यूरोपीय रक्षा प्राथमिकताओं के साथ संरेखित** किया जाना चाहिये।
- **वैकल्पिक आपूर्ति शृंखला विकसित करना: भारत-यूरोपीय संघ** और **व्यापार प्रौद्योगिकी परिषद (TTC)** के तहत सेमीकंडक्टर तथा AI सहयोग का विस्तार किया जाना चाहिये।
    - **IMEC** को मज़बूत करने से एक नया **व्यापार और ऊर्जा मार्ग** का सृजन होगा जो चीन को दरकिनार कर देगा।
- **डिजिटल और हरित प्रौद्योगिकी साझेदारी को बढ़ाना:** नवीकरणीय ऊर्जा, **फिनटेक और डेटा गोपनीयता** विनियमों में सहयोग बढ़ावा दिया जाना चाहिये।
    - **ग्रीन हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक वाहनों** और **कार्बन-शून्य प्रौद्योगिकियों में सहयोग** बढ़ाने से **दोनों अर्थव्यवस्थाओं को लाभ** होगा।
    - डिजिटल व्यापार विस्तार को सुविधाजनक बनाने के लिये **भारत की डेटा सुरक्षा नीतियों को यूरोपीय संघ के मानकों के अनुरूप** बनाना।
- **भारत को वैश्विक कूटनीतिक संतुलनकर्त्ता के रूप में स्थापित करना:** अमेरिका-यूरोप संबंधों में तनाव के बीच, **भारत प्रमुख शक्तियों के बीच एक सेतु** के रूप में कार्य कर सकता है तथा एक संतुलित वैश्विक व्यवस्था को बढ़ावा दे सकता है।
    - **G20, BRICS+ और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार** जैसे बहुपक्षीय मंचों पर यूरोपीय संघ के साथ जुड़ने से भारत का वैश्विक प्रभाव बढ़ेगा।
- **घरेलू व्यापार एवं निवेश नीतियों में सुधार:** भारत को यूरोपीय निवेश को आकर्षित करने के लिये **नियामक कार्यढाँचे को सरल** बनाना चाहिये, **बुनियादी अवसंरचना को बढ़ाना चाहिये** तथा **नीतिगत स्थिरता सुनिश्चित** करनी चाहिये।
    - बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) सुरक्षा को दृढ़ करने और इज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस सुनिश्चित करने से **यूरोपीय प्रौद्योगिकी कंपनियाँ** भारत में अनुसंधान एवं विकास केंद्र स्थापित करने के लिये प्रोत्साहित होंगी।

निष्कर्ष

भारत-यूरोपीय संघ की साझेदारी एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर है, जिसमें **आर्थिक, सुरक्षा और तकनीकी सहयोग** उनके भविष्य के संबंधों को आयाम दे रहे हैं। **व्यापार विवादों, नियामक बाधाओं और भू-राजनीतिक मतभेदों को सुलझाना** इस साझेदारी की पूरी क्षमता को साकार करने के लिये महत्त्वपूर्ण होगा।

एक मज़बूत **भारत-यूरोपीय संघ गठबंधन** वैश्विक स्थिरता को बढ़ाएगा, आर्थिक समुत्थानशक्ति बढ़ाएगा और विकसित वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करेगा।

[illegible]:

प्रश्न. भारत-यूरोपीय संघ संबंधों में प्रमुख बाधाएँ क्या हैं तथा दोनों पक्ष अधिक सुदृढ़ साझेदारी बनाने के लिये इनसे किस प्रकार निपट सकते हैं?

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

[illegible]

प्रश्न 1. समाचारों में आने वाला 'डिजिटल एकल बाज़ार कार्यनीति (डिजिटल सिंगल मार्केट स्ट्रेटेजी)' पद किसे निर्दिष्ट करता है ?

(a) ASEAN को
(b) BRICS को
(c) EU को
(d) G20 को

उत्तर: (c)

प्रश्न 2. समाचारों में कभी-कभी देखे जाने वाला 'यूरोपीय स्थिरता तंत्र (European Stability Mechanism)' क्या है?

(a) मध्य-पूर्व से लाखों शरणार्थियों के आने के प्रभाव से निपटने के लिए EU द्वारा बनाई गई एक एजेंसी
(b) EU की एक एजेंसी, जो यूरोक्षेत्र (यूरोजोन) के देशों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है
(c) सभी द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय व्यापार समझौतों को सुलझाने के लिए EU की एक एजेंसी
(d) सदस्य राष्ट्रों के बीच मतभेद सुलझाने के लिए EU की एक एजेंसी

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/strengthening-india-eu-partnership